पद ३५

(राग: खमाज - ताल: त्रिताल)

श्रीमाणिक मंत्र स्मरा स्मरा रे। जन स्मरा विस्मरा रे।।ध्रु.।। एक्या ठायीं स्थिर करुनि मन। निशिदिनिंध्यान धरा रे।।१।। तोडुनी भवबंध आनंदानंद। सुखकंद खरा रे।।२।। केले मुक्त मनोहर वत्सा। नेलें हो निजघरा रे।।३।।